भारतीय ज्ञान परंपरा

संस्कृति, दर्शन, शैक्षिक विचारधाराएँ और नवाचार

सम्पादक :
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

भारतीय ज्ञान परंपरा :
संस्कृति, दर्शन, शिक्षा विचारधाराएँ और नवाचार

सम्पादक :
डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा
Ph.D., D.Lit. (Sub.)
निदेशक, कॉम्पिटिशन प्लस ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन,
अजमेर

छवि पब्लिकेशन्स
अजमेर-305001

प्रकाशक :

छवि पब्लिकेशन्स

अजमेर-305001

मो. 9660111549

संस्करण :

प्रथम 2022-2023

ISBN : 978 - 81 - 89435 - 64 - 6

मूल्य - 300/-

रचना - भारतीय ज्ञान परम्परा में शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार

सम्पादक - डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा

मुद्रक - श्रीनिवास प्रिन्टोग्राफिक्स, अजमेर

22. भारतीय संस्कृति का विश्व में प्रचार-प्रसार

नरेन्द्र सिंह नाथावत
सहायक आचार्य (शिक्षा विभाग)
हुकुमचन्द नोबेल इंस्टीट्यूट ऑफ साईंस एण्ड टेक्नोलॉजी, अजमेर

1. भारतीय सांस्कृतिक क्षेत्र-एक परिचय

वृहतरभारत याभारतीय सांस्कृतिक क्षेत्र, दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया में कई देशों और क्षेत्रों में बना एक क्षेत्र है जो ऐतिहासिक रुप से भारतीय संस्कृति से प्रभावित थे जो स्वयं इन क्षेत्रों की विशिष्ट स्वदेशी संस्कृतियों से बना था।

प्रारम्भिक भारत में विशेष रूप से दक्षिणपूर्व एशियाई प्रभाव का हिन्दू धर्म और भारतीय पौराणिक कथाओं पर निर्माण का स्थायी प्रभाव पड़ा।

यह भारतीय उपमहाद्वीप और निकटवर्ती देशों के अन्तर्गत करने वाला एक छत्र शब्द है जो सांस्कृतिक रूप से एक विविध सांस्कृतिक रेखा से जुड़ा हुआ है। ये देश एक-दूसरे से सांस्कृतिक और संस्थागत तत्वों की स्वीकृति और समावेशन द्वारा विभिन्न मात्रा में परिवर्तित हो गए।

साधारण युग की आरम्भिक शताब्दियों तक दक्षिणपूर्व एशिया के अधिकांश राज्यों ने हिन्दू संस्कृति, धर्म और प्रशासन के परिभाषित पहलुओं को प्रभावी ढंग से आत्मसात कर लिया था। हरिहर की अवधारणा द्वारा दैवीय ईश्वर राजत्व की धारणा पेश की गई थी। संस्कृत और अन्य भारतीय अभिलेख प्रणालियों को दक्षिण भारतीय पल्लव राजवंश और चालुक्य राजवंश की तरह अधिकारिक घोषित किया गया था। ये भारतीय कृत राज्य आश्चर्यजनक बलिष्ठता, राजनीतिक अखण्डता और प्रशासनिक धैर्य की विशेषता थी।

2. मध्य एशिया में भारतीय संस्कृति

ईरान, भारत और चीन के मध्य वाले भाग को विशेष रूप से 'मध्य एशिया' की संज्ञा दी गई। मध्य एशिया में निम्न प्रदेश हैं- (1) काशगर, (2) भारकंद, (3) खोतान, (4) शानशान, (5) तुफनि, (6) कुची, (7) करशहर।

मध्य एशिया में भारतीय संस्कृति को वर्चस्व के रूप में देखा गया। इन प्रदेशों में भारतीय संस्कृति यहाँ स्थित बौद्ध विहारों के स्तूप, प्रदेश में राजाओं के नाम और

बुद्धि की प्रतिमाओं के माध्यम से मिलती है। इन भारतीय संस्कृति को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है-

(अ) अफगानिस्तान :

1. भारतीय संस्कृति के वेद 'ऋग्वेद' में उल्लेखित कुभा, क्रुमू सुवास्तु व गोमट जो कि अफगानिस्तान की नदियाँ थी, में, नदियाँ यह स्पष्ट करती है कि सिन्धु नदी के सहायक नदियाँ भारतीय संस्कृति को अफगानिस्तान से जोड़ती थी।

2. महाभारत काल में भारतीय शासकों के अफगानिस्तान के प्रदेश गांधार अर्थात कान्धार से वैवाहिक संबंध थे। इसमें भी भारतीय संस्कृति की झलक दिखाई देती है।

3. अशोक ने हिन्दुकुश पर्वतमाला पर शोतुर्गुई मुण्डिगाक नामक स्थान पर शारएकुना नामक शिलालेख की स्थापना की।

4. इसी प्रकार अफगानिस्तान में 4-5 शताब्दी ई. की बुद्ध की प्रतिमाएँ बामियान पर्वत पर मिली है जिनको 2001 में तालिबान सरकार ने नष्ट कर दिया।

इन सबकी जानकारी हमें चीनी यात्री फाह्यान के ग्रन्थों में प्राप्त होती है।

(ब) कूची/कूचा

कूची जो कि मध्य एशिया का उत्तरी भाग और चीन का पश्चिमी भाग के रूप में वर्चस्व में देखा गया। यहाँ पर भारतीय संस्कृति की झलक निम्न प्रकार से देखी गई है-

1. 12 शताब्दी ई.पू. के वहां के राजाओं के नाम कुछ इस प्रकार थे5 सुवर्णपुष्प, सुवर्णदेव, हरिपुष्प और हरदेव जो भारतीय राजाओं के नाम से प्रतीत होते हैं।

2. कुमार नारायण को वहाँ के शासक ने राजगुरु की उपाधि दी। कुमार नारायण ने कूची में 'जीवा' नामक स्त्री से विवाह किया और बौद्ध की महायान शाखा का विस्तृत रूप से विकास किया जो भारतीय संस्कृति का उभ्रता रूप था।

3. मुख्य राशिया के कुन्ती प्रदेश से 4 शताब्दी के 10,000 स्तूपों के साक्ष्यमिले हैं।

(स) खोतान

खोतान जो कि पश्चिमी चीन अर्थात मध्य एशिया के दक्षिणी भाग है। इसमें बौद्ध धर्म के बिहारों को भारतीय संस्कृति के अस्तित्व के रूप में परिभाषित किया जाता है जो निम्न प्रकार है-

1. चीनी यात्री फाहियान ने अपनी रचनाओं में कहा कि 'गौतमविहार' में 3000 से अधिक भिक्षु अध्ययन करते हैं और कई योग्य भारतीय विद्वान भी वहीं पर निवास करते हैं।

2. वे राजा के नये विहार भी स्थापित किये गए जिनके निर्माण में 80 वर्ष और

3 पीढ़ियों का समय लगा।

3. सम्राट ने अनेक रचनाएँ की जो उसके पुत्र कुणाल ने भी अपनी संस्कृति का हिसाब बनाया।

कुणाल के पौत्र विजित सम्भव के काल के 5वें वर्ष में वैरोचन भारत आया और खोतान में बौद्ध की महायान शाखा का प्रचार किया।

विशेष:- तिब्बती इतिहास से यह पता चलता है कि विजित सम्भव के परवर्ती शासकों में एक लम्बी सूची ने 'विनित' नामक उपाधि धारण की। कनिष्क अशोक की उपायिा।

(द) चीन

भारतीय संस्कृति चीन में भी अपनी विशिष्ट पहचान रखती है। महाभारत, मनुस्मृति और कौटिल्य के अर्थशास्त्र में चीनी सिल्क का उल्लेख मिलता है। इसको निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जाता है।

1. चीन के प्रथम शताब्दी ई. के एक ग्रन्थ में उल्लेखित है कि चीन हुआंगचे (कांची-तमिलनाडु) को कई उपहार देता था क्योंकि हुआंगचे से उनके व्यापारिक संबंध घनिष्ठ थे।

2. **चीन के शासक :**

(क) प्रथम सदी - मिंगति इसी के शासन काल में धर्मरत्न और कश्यप मातंग, अनेक पांडुलिपियाँ लेकर श्वेत घोड़ों पर सवार होकर भारत से चीन आए। इन्हीं के लिए 'मिंगति' ने 'श्वेताक्षरविहारी' का निर्माण करवाया।

(ख) तीसरी सदी - 'मिन्' राजवंश

(ग) सूई राजवंश इनके समय बौद्ध धर्म अभिन्न अंगों में बट गया था।

(ङ) लिआंगबूती ने बौद्ध धर्म को एक प्रकार से 'राजधर्म' की संज्ञा दी थी।

चीन का तांग वंश

तांग वंश का शासनकाल चीन का 'बौद्धकाल' के रूप में कहा गया। इसी का दूसरा उदाहरण तुल-हुआंग की गुफाओं की आकृति एवं दृश्य रामभारत की अजंता की गुफागो के समान थी।

चीन में अमोधवज्र ने वज्रयान शाखा का चीन में विस्तारपूर्वक प्रचार किया।

बोधिसेन ने भारत से आरम्भ कर चीन से होते हुए कोरिया और जापान तक भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर इसे एक विशिष्ट अनुभूति की भावना दी।

बौद्ध धर्म के प्रसार के साथ चीन में बहुत ही बड़े स्तर पर गुफाओं की खुदाई तथा मंदिरों और विहारों के निर्माण का कार्य आरम्भ हुआ। इनमें से हुन-हुवांग, युन-कांग और लुंगमेन दुनिया के प्रसिद्ध गुफा परिसर में से है। इसमें भारतीय प्रभाव काफी

स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

इसी काल में हजारों संस्कृत किताबों का चीनी में अनुवाद किया गया जो इस सांस्कृतिक संबंध तथा विचारों के आदान-प्रदान का उत्तरदायित्व आचार्यों और भिक्षुओं के दो तरफा आवागमन पर निर्भर है।

3. इंडो-चीन में भारतीय संस्कृति

(अ) तिब्बत

1. तिब्बत में भारतीय संस्कृति का विशिष्ट रूप दिखाई देता है। तिब्बत को महाभारत में त्रिविष्टप और छोलखा नामों से जाना जाता था।

2. भारत के बौद्ध प्रचारक 'शांतिरक्षित' एवं 'पद्मसम्भव' तिब्बत में बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार करने हेतु गये और तिब्बत में 'समयस' नामक विहार की स्थापना की।

3. अंतत: तिब्बत के स्थानीय धर्म 'बोद्ध धर्म' के अनुयायियों ने 'पद्मसम्भव' को अपना गुरुमाना।

4. एक और बौद्ध प्रचारक जिनका निम्न प्रकार से वर्णन है कि उन्होंने विक्रमशिला व साक्याविहार का निर्माण करवाया।

विशेष – तिब्बत के राजा 'गम्पो' ने 'धोनमीसम्मोट' को बौद्ध धर्म की शिक्षा ग्रहण करने के लिए भारत के विश्वविख्यात 'नालन्दा विश्वविद्यालय' भेजा। 'तिब्बती वर्णमाला का जनक' - धोनमीसम्मोट।

(ब) म्यांमार (बर्मा)

शाक्य वंश के राजा अधिराज ने छठी शताब्दी में भारतीय साम्राज्य को म्यांमार अर्थात् बर्मा में स्थापित किया। इसके अलावा अनेकों प्रकार से म्यांमार में भारतीय संस्कृति झलक रही है। यथा-

1. वहाँ की रानियों ने 'महादेवी' की उपाधि धारण की थी जो एक भारतीय नाम है।

2. सातवीं शदी में राजा द्वारावती का शासन अस्तित्व में नजर आता है।

3. 11वीं शताब्दी में म्यांमार में राजा अनिरुद्ध ने आनन्द मंदिर का निर्माण करवाया जो कि 31 फीट ऊँचा है।

4. म्यांमार अर्थात बर्मा में भारतीय संस्कृति की अतिरिक्त जानकारी टॉलेमी की भूगोल की पुस्तक से मिलती है।

5. सांस्कृतिक कूटनीति - पर्यटन की दृष्टि से म्यांमार में बौद्ध धर्म के माध्यम से भारत की कूटनीति का संचालन करना बहुत ही आसान हो गया।

(स) जावा महाद्वीप

जावा अर्थात् यवद्वीप इण्डोनेशिया का सघन आबादी वाला क्षेत्र है। यहाँ की

भारतीय संस्कृति एक विशिष्ट रूप से भारत में वर्चस्व के रूप में देखी गई है।

1. यहाँ समेरू, सरयू, गोमती नदियों का रूप अस्तित्व में आया।
2. यवद्वीप में, शक संवत प्रचलित है जो वर्तमान स्वरूप में देखा गया है।
3. जावा में दूसरी शताब्दी ई.पू. में देववर्मा ने हिन्दू साम्राज्य की स्थापना की।
4. यहीं पर आठवीं शताब्दी में पूर्णवर्मा ने 'बोरोबुदूर स्तूप' का निर्माण करवाया।

बोरोबुदूर स्तूप – यूनेस्को ने इसे 1991 ई. में विश्व धरोहर में शामिल किया। इस स्तूप में 9 चबूतरे हैं।

विशेष – मजूमदार ने इसे विश्व का आठवाँ आश्चर्य कहा।

(द) सुमात्रा

1. इसका प्राचीन नाम सुवर्ण द्वीप था।
2. सुमात्रा द्वीप इण्डोनेशिया का सबसे बड़े द्वीप के रूप में परिभाषित किया गया है।
3. सुमात्रा ने चौथी शताब्दी में 'श्रीविजय' ने हिन्दू साम्राज्य की स्थापना की।
4. भारतीय यात्री इत्सिंग ने सुमात्रा में अनेक प्रकार के ग्रंथों का अध्ययन किया और वे भारतीय संस्कृति को झलकाते हैं।

(य) बोर्नियो

1. बोर्नियो प्रदेश में भारतीय संस्कृति को झलकाने वाले 'संस्कृत' के शिलालेख मिले हैं।
2. इस क्षेत्र में कौण्डिन्यकुट के शासक मुलावमवि अश्ववर्मन का साम्राज्य स्थापित किया।
3. बोर्नियो में भारतीय देवताओं ब्रह्मा, विष्णु, महेश की मूर्तियाँ मिली हैं और सर्वप्रथम पूज्य गणेश की भी मूर्तियां आई।
4. बाली प्रदेश में सघन आबादी में भारतीय मूर्तियाँ मिली हैं।

(र) मलेशिया

प्राचीन समय में इसे 'मलयद्वीप' के नाम से जाना जाता है। यह पहली से पांचवीं सदी ईस्वी तक भारतीय साम्राज्य रहा।

1. मलेशिया का यह क्षेत्र भारतीय संस्कृति का 'सुदूर पूर्व में प्रवेश द्वार' कहलाता है।
2. यहाँ पर भारतीय संस्कृति को प्रदर्शित करने वाली मूर्तियों व मंदिरों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
3. मलेशिया में 'लक्कोल' नामक बन्दरगाह स्थित है जिसका उपयोग अधिकांश भारतीय मलेशिया से व्यापार करने के लिए करते थे।

4. 'कुआलालम्पुर' में 'पुत्रजया' एक प्रशासनिक केन्द्र के रूप में विकसित हुआ है।

5. मलेशिया में महाकाल के मंदिर को अस्तित्व में देखा गया है।

6. मलेशिया में आभूषण जड़ित 'विष्णु कीणकड पर सवार' मूर्ति मिली है जहाँ भारतीय संस्कृति का एक सुस्पष्ट उदाहरण है।

(व) कंबोडिया

1. कम्बोडिया का प्राचीन नाम 'कम्बुज' रूप में था।

2. प्रथम शताब्दी में एक सभ्य 'कौण्डिन्य' नामक शासक ने भारतीय राज्य स्थापित किया।

कम्बोडिया पर अगले 100 वर्षों तक कौण्डिन्य के वंशजों ने राज किया।

3. चीनी इतिहास के अनुसार कम्बुज फूनान का ही एक भाग है जो कि इंडो-चाइना का एक विशालतम साम्राज्य था।

4. सातवीं शताब्दी में 'श्रुतवर्मन और शक्तिवर्मन' नामक राजाओं ने फूनान पर भी अधिकार किया।

विशेष - अंगरकोरवाट का विष्णु मंदिर

* इस मंदिर का निर्माण 12वीं सदी अर्थात 1155 ई. के आसपास सूर्यवर्मन द्वितीय ने करवाया।
* यह मंदिर पंचायत शैली का मंदिर है जिसके चारों ओर छोटे-छोटे मंदिर हैं।
* यह मंदिर पूर्ण रूप से पत्थर से निर्मित है।
* अंगकोरबाट मंदिर कंबोड़िया में मेकांग नदी के तट पर स्थित है।
* इस मंदिर के चारों ओर 650 फीट चौड़ी खाई है, जिसमें मेकांग नदी का पानी भरा रहता है।
* यूनेस्को ने अंगकोरबाट मंदिर को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया है।

(श) वियतनाम

1. वियतनाम का प्राचीन नाम 'चम्पा' था।

2. दूसरी शताब्दी में भद्रवर्मन, जोकि एक शक्तिशाली और विद्वान शासक था, ने वियतनाम में भारतीय राज्य स्थापित किया।

3. इस शिव मंदिर का निर्माण पूरी तरह से ईंटों से हुआ प्रतीत होता है।

4. भद्रवर्मन में विश्वत नाम में तीन साम्राज्य, जिसमें उत्तर में अमरावती, मध्य में विजय और दक्षिण में पाण्डुरंगा साम्राज्य स्थापित किया।

4. भारतीय संस्कृति और अरबन सभ्यता के संबंध

स्थल और समुद्र मार्ग के द्वारा पश्चिम एशिया से भारत का संबंध प्राचीन

काल से चला आ रहा है। यह दो संस्कृति क्षेत्रों के बीच संबंध, पश्चिम एशिया में इस्लामी सभ्यता के उदय और प्रसार के साथ और गहरे हुए। इस संबंध के आर्थिक पक्ष के विषय में नवीं सदी के मध्य में अरब तथा अन्य व्यापारी यात्रियों जैसे सौदागर सुलेमान, अल–मसूदी, इब्नहौकुल, अलइदरिसी आदि के वृत्तांतों से जानकारी मिलती है।

इसी बीच खगोल विज्ञान के क्षेत्र में दो महत्वपूर्ण ग्रन्थ 'ब्रह्म–स्फुट–सिद्धांत' जिसे अरब में सिन्धिन के नाम से जानते हैं तथा 'खण्डनखाध' (अरकंद नाम से प्रसिद्ध) सिन्ध के दूतावासों के माध्यम से बगदाद (ईराक की राजधानी) पहुँचे।

इन दूतावासों के भारतीय विद्वानों की मदद से इन ग्रन्थों का अरबी में अनुवाद 'अल–फजारी' ने किया। संभव अल–फजारी ने 'याकूब–इन तारीक' की भी मदद की थी। बाद के समय में आर्यभट्ट और वराहमिहिर कृत खगोल विज्ञान के ग्रंथों का भी अरब जगत में अध्ययन हुआ और इन्हें अरब के वैज्ञानिक साहित्य में पूर्ण रूप से शामिल किया।

भारत के चिकित्सा और औषधि विज्ञान के ग्रंथों का खलिफा 'हाकन–अल–रशीद' जो सन् 786 ई. से सन् 809 ई. तक बगदाद का शासक रहा, के निर्देश में अरबी में अनुवाद हुआ। उदाहरण के तौर पर सुश्रुत संहिता का अनुवाद अरबी में एक भारतीय ने किया जिसे 'मेख' कहा जाता है। अरब सभ्यता को भारत का एक महत्वपूर्ण योगदान गणित भी है।

5. भरतीय संस्कृति के रोम से संबंध

ईसा युग की प्रथम तीन शताब्दियों में भारत का पश्चिम के साथ लाभप्रद समुद्री व्यापार हुआ जिसमें 'रोमा साम्राज्य' प्रमुख था। रोम भारतीय सामान का सर्वोत्तम ग्राहक था। यह व्यापार दक्षिण भारत के साथ हुआ जो कोयम्बटूर और मदुरई में मिले रोम के सिक्कों से सिद्ध होता है।

रोम में काली मिर्च, पान, मसालों और इत्र की बहुत मांग थी। बहुमूल्य पत्थर जैसे नगीने, हीरे, पन्ने, माणिक्त और मोती, हाथी दन्त, रेशम और मलमल के वस्त्र वहाँ बहुत पसंद किए जाते थे। रोम के साथ व्यापार में भारत में सोना आता था। जिससे उस समय कुषाण साम्राज्य को आमदनी के रूप में स्थायी स्वर्ण मुद्रा प्राप्त होती है। कुछ इतिहासकारों का मत है कि भवन अंगरक्षकों में कुछ रोमवासी भी हो सकते थे।

प्राचीन काल में विदेशों के साथ भारत के व्यापार संबंध कितने महत्वपूर्ण थे, इसका अनुमान भारतीय राजाओं द्वारा भेजे जाने वाले और उन से मिलने वाले राजदूतों की संख्या से लगा सकते हैं। एक पांड्य (चंदकल) राजा ने ईसा पूर्व पहली शताब्दी में ईसा पूर्व पहली शताब्दी में रोम के सम्राट अगस्टग के पास राजदूत भेजा था। ईसा के

बाद सन् 99 में भी 'ट्राय' के लिए राजदूत भेजे गए।

कलाउडियस ट्रेजन, एंटोनमिस, पूइस, इंस्तिमान तथा अन्य राजदूतों ने विभिन्न भारतीय दरबारों की अत्यन्त शोभा बढ़ाई। भारतीय संस्कृति के रोम के साथ इसी विस्तार में वर्चस्व के रूप में प्रभावी देखा गया है जो सुस्पष्ट तरीके से ग्रन्थों में उल्लेखित है।

6. जहाज और विदेशी व्यापार

विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रसार के एक प्रमुख माध्यम रहा है। प्राचीन समय से ही हमारे भारतीय जहाज विशल सागर को पार कर विदेशी तटों पर पहुंचे। उन्होंने वहां बहुत से देशोंके साथ व्यापारिक संबंध बनाए।

पड़ोसी देशों के साहित्य, कला और शिल्प पर भारतीय संस्कृति और सभ्यता की छाप साफ-साफ दिखायी देती है। यहाँ तक कि सुदूर अमरीकी तटों सुरीनाम और कैरेबियन द्वीपों पर भी 'भारतीय संस्कृति' के स्मृति चिह्न मिलते हैं।

'समुद्रगुप्त' (सन् 340-380) के पास न केवल शक्तिशाली सेना थी बल्कि सशक्त जल सेना भी थी। गंगा-पार प्रायद्वीप में तथा मलय के संग्रहालयों में ऐसे कुछ शिलालेख मिले हैं जो गुप्त काल में भारतीय नाविकों के क्रियाकलापों को प्रमाणित करते हैं।

हर्षवर्धन (606-647) के काल में भारत की यात्रा करने वाले ह्वेनसांग ने भी उस समय के भारत के विषय में विस्तारपूर्वक लिखा है। चोल शासकों ने एक मजबूत सेना बनाई थी और समुद्र पार के देशों पर आक्रमण भी किए थे। इस प्रकार भारतीय राजाओं ने विदेशों में भारतीय संस्कृति स्थापित की और सम्पूर्ण विश्व में इसके प्रभुत्व को सम्पन्न किया।

❑❑❑